सब्जियों की पौध कैसे तैयार करे

राज कुमार जाखड़ [1], चंद्रकान्ता जाखड़ [2], कुमारी पुष्पा [3],

[1] विद्यावाचस्पति छात्र, उद्यान विज्ञान विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
[2] स्नाकोत्तर छात्रा, शस्य विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
[3] विद्यावाचस्पति छात्रा, उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

पौधशाला से किसानों को कई लाभ मिलते है। जहां इसमें प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक पौधे लगाए जा सकते है, वहीं पौधों के अनुसार वातावरण भी आसानी से तैयार किया जा सकता है। जिन पौधों को खेत में बाहर कहीं नही उगाया जा सकता, उन्हें नियंत्रित परिस्थितियां होने के कारण नर्सरी में आसानी से उगाया जा सकता है यहां पौध का प्रबंधन और रोग व बीमारियों से बचाव भी तुलनात्मक रूप से अधिक आसान होता है। इसके अलावा नर्सरी में ऑफसीजन सब्जियों की पैदावार कर और तैयार पौध को बाजार में बेच कर किसान अच्छी आमदनी भी अर्जित कर सकता है।

मिट्टी और बीज को करें उपचारित

नर्सरी मे बीज को रीढ़ माना जाता है। यह हमेशा भरोसेमंद स्त्रोत मसलन बीज निगमों, सरकारी नर्सरी व फार्म, कृषि विश्वविद्यालय और कृषि विज्ञान केन्द्र से खरीदने चाहिए। बुवाई से पहले मिटटी और बीज को उपचारित कर लें।

मृदा उपचार

भूमि को फफूंद रहित करने के लिए फारमेल्डिहाइड रसायन से उपचारित करें। 25 एमएल रसायन को एक लीटर पानी के अनुपात में मिलाकर मिटटी पर तब तक छिडके जब तक वह तर न हो जाए। इसे पॉलीथिन से अच्छी तरह ढ़क लें। करीब एक सप्ताह बाद पॉलीथिन हटाए और 4–5 बार जुताई व खुदाई कर खुला छोड दें। भूमि को भुरभुरा बनाकर 15 दिन बाद बुवाई करे।

बीजोपचार

बीज की उपरी सतह पर सूक्ष्म जीव है तो कैल्शियम हैपोक्लोराइट 2 से बीजोपचार करें।

बीज के अंदर कोई रोग है तो उसे दूर करने के लिए गर्म पानी या भाप मे 490–570 सेंटीग्रेड तापमान पर 30 मिनट तक रखें।

स्थान का चयन सबसे अहम

किसी भी पौधशाला को विकसित करने से स्थान का चयन सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। नर्सरी वाले स्थान की मिटटी, जलवायु, जल की उपलब्धता जैसे कुछ ऐसे अहम् बिन्दु है जिन्हे पौधशाला लगाने के लिए ध्यान में रखना चाहिए।

- नर्सरी ऐसे खुले व संरक्षित स्थान पर हो, जहां पौधो को उचित प्रकाश मिल सके।
- स्थान उंचाई पर हो ताकि पानी की उचित निकासी हो इसके अलावा पानी का स्रोत भी पास हो।
- इसकी भूमि दोमट बलुई होनी चाहिए, जिसका पीएच मान 6 से 7.5 के बीच हो। मिटटी न अधिक अम्लीय हो न क्षारीय। मिटटी भारी न हो। यह जीवाश्मयुक्त, उपजाऊ और भूरभूरी हो।
- स्थान खेत के किनारे होना चाहिए, ताकि कृषि कार्यो में रूकावट न हो।
- परिवहन के लिए सडक भी नजदीक हो।

इस तरह बनाएं क्यारियां

क्यारियां इस तरह बनानी चाहिए कि पानी न रूके। ये धरातल से 15 से 20 सेमी ऊची बनानी चाहिए। बेड की लंबाई 3 मीटर व चौडाई 1.2 मीटर रखी जाए। दोनो क्यारियों के बीच दूरी 40 से 50 सेमी रहे। फसल विशेष मे यह घटाई या बढाई जा सकती है। क्यारियों में 10 वर्गमीटर क्षेत्र में 15–20 किलो सडी गोबर खाद, ट्राइकोडर्मा के साथ 50:1 के अनुपात में मिलाकर 200 ग्राम सुपर फास्फेट, 15 ग्राम इंडोफिल एम 45 फंफुदनाशक और धुल कीटनाशक के साथ मिलाकर डाले, हल्की गुडाई कर समतल कर लें। क्यारियों में कंकड व घास के बीज नही रहने चाहिए। सब्जी के बीजो की हमेशा कतारों में ही बुवाई करें।

बुवाई के बाद यह करे।

बुवाई के बाद बीजो को केंचुआ खाद या गोबर खाद से ढ़क दें। धूप से बचाव के लिए चटाई या घास से ढ़क दें। फव्वारे से नियमित रूप से सुबह हल्की सिंचाई करें। अंकुरण के बाद घास हटा दें, और हल्की सिंचाई से नमी बनाए रखें। जब पौध 8 से 10 सेमी उची हो जाए तो 0.3 प्रतिशत यूरिया का छिडकाव करें। हल्की निराई गुडाई से खरपतवार हटाते रहें। खेत मे रोपाई से 3–4 दिन पहले सिंचाई रोक दें, और उखाडने से एक घंटा पहले हल्की सिंचाई करें। पौध का रोपण शाम के समय करें।